ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ

प्रस्तावना

यह वर्ष 2008 सम्पूर्ण भारतवासियों द्वारा श्री गुरुग्रंथ साहिब जी की गुरता–गद्दी के 300वें वर्ष के उत्सव के रूप में मनाया जा रहा हैं। श्री गुरुग्रंथ साहिब जी की वाणी राष्ट्र के सभी क्षेत्रों, सामाजिक समूहों का प्रतिनिधित्व करती है। इसीलिए इसे एक राष्ट्रीय पर्व के रूप में मनाने के लिए देशवासी उत्सुक हैं।

सन् 1708 में, दशम् गुरु गोबिन्द सिंह जी द्वारा श्री गुरुग्रंथ साहिब जी महाराज को गुरुपद प्रदान किया था और वाणी रूप को गुरुरूप में स्थापित किया था। आज इसी के उपलक्ष्य में गुरता–गद्दी का त्रिशताब्दी समारोह मनाया जा रहा हैं। अखिल भारतीय स्तर पर मनाए जाने वाले गुरता–गद्दी समारोह वर्ष में श्री गुरुग्रंथ साहिब जी के स्वरूप, इतिहास, गुरबाणी का जीवन दर्शन व इसका सांस्कृतिक दृष्टिकोण से महत्व आदि बिन्दु देश के सभी विद्यार्थियों के ज्ञान को बढ़ाने वाले हैं। यह ज्ञान भावी पीढ़ी का मार्गदर्शन करने वाला भी हैं।

श्री गुरुग्रंथ साहिब में गुरवाणी, गुर–शबद् का स्वरूप अकाल है। ईश्वर को अकाल पुरख कहा गया है, अर्थात् ईश्वर का अस्तित्व कल था, आज है और कल भी रहेगा। ईश्वर अकाल है। एक अकाल पुरख परमात्मा की स्तुति–वन्दना गुरमत का मूल ध्येय है। अतः यह विचार दृढ़ता से सामने आया है कि सनातन काल से गुर–शबद् था, आज भी है। इस प्रकार गुरमत का यह विचार स्वतः ही स्पष्ट हो जाता है कि धर्म, ईश्वर की स्तुति–वंदना, गुर–शबद् का अस्तित्व अनादिकाल से है और उसका सतत् प्रवाह हो रहा है। श्री गुरुग्रंथ साहिब जी के पृष्ठ 1390 पर अंकित शबद् इस प्रकार है–

सतजुगि तै माणिओ छलिओ बलि बावन भाइओ॥
त्रेतै तै माणिओ रामु रघुवंसु कहाइओ॥
दुआपुरि क्रिसन मुरारि कंसु किरतारथु कीओ॥
उग्रसैण कउ राजु अभै भगतह जन दीओ॥
कलिजुगि प्रमाणु नानक गुरु अंगदु अमरु कहाइओ॥
स्री गुरु राजु अबिचलु अटलु आदि पुरखि फुरमाइओ॥7

भारत एक बहुविचारी, जीवन्त संवेदनाओं वाला आध्यात्मिक समाज है। अकालपुरख, ईश्वर के स्वरूप व प्रकृति के बारे में गुरबाणी में है–

पृष्ठ 97

छात्र–छात्राओं के श्री गुरुग्रंथ साहिब जी से संबंधित ज्ञान को बढ़ाने के लिए एक प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा हैं। इसी प्रतियोगिता के दृष्टिकोण से इस पुस्तिका **''चलो गुरु के द्वार''** की रचना की गई है, जो श्री गुरुग्रंथ साहिब की वाणी, उसके स्वरूप व उसके इतिहास से विद्यार्थियों को अवगत कराती हैं।

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ

चलो गुरु के द्वार

श्री गुरुग्रंथ साहिब जी का संक्षिप्त इतिहास

प्रथम गुरु श्री गुरु नानकदेव जी महाराज के अविर्भाव के साथ ही विलक्षण नाम-तत्व सिमरन वाले जीवन दर्शन का प्रारम्भ भी होता है। धर्म का प्रचार करने के लिए श्री गुरु नानकदेव जी ने भिन्न-भिन्न दिशाओं में जो प्रवास किए, उन्हें **उदासी**

पोथी साहिब **भाई गुरदास जी की वारों**

आसा हथि किताब कछि कूजा बांग मसुल्ला धारी।।

मक्का व मदीना

भाई लहणा जी **गुरु अंगद देव जी**

पोथी साहिब

रामसर

श्री अमृतसर

श्री हरिमन्दिर साहिब जी

गुरु अर्जुनदेव जी ने सम्पूर्ण गुरबाणी को श्री गुरुग्रंथ साहिब जी के रूप में सम्पादित किया और श्री हरिमन्दिर साहिब जी में स्थापित किया

पहला प्रकाश

श्री गुरुग्रंथ साहिब जी का स्वरूप

श्री गुरुग्रंथ साहिब जी में अंकित बाणी की रचना करने वाले गुरु साहिबानों, भक्त साहिबानों, गुरसिखों एवं भट्ट साहिबानों का परिचय–

	नाम	जीवन-काल	पृष्ठभूमि	कुल शबद्	प्रान्त
1.	गुरु नानकदेव जी	1469–1539	बेदी, क्षत्रीय	976	राय भोए दी तलवंडी, पंजाब
2.	गुरु अंगददेव जी	1504–1552	त्रेहन, क्षत्रीय	62	मत्ते दी सराय, पंजाब
3.	गुरु अमरदास जी	1479–1574	भल्ले, क्षत्रीय	901	बासरके, पंजाब
4.	गुरु रामदास जी	1531–1581	सोढ़ी, क्षत्रीय	979	लाहौर, पंजाब
5.	गुरु अर्जुनदेव जी	1563–1606	सोढ़ी, क्षत्रीय	2216	गोइन्दवाल, पंजाब
6.	गुरु तेगबहादुर जी	1621–1674	सोढ़ी क्षत्रीय	116	गुरु के महल, अमृतसर, पंजाब
7.	भक्त कबीर जी	1379–1495	जुलाहा	541	वाराणसी, उत्तर प्रदेश
8.	भक्त नामदेव जी	1270–1350	छीपा	60	नारसी नामदेव, महाराष्ट्र
9.	भक्त रविदास जी	15वीं सदी	चर्मकार	41	वाराणसी, उत्तर प्रदेश
10.	शेख फरीद जी	1173–1265	सूफी फ़क़ीर	122	कोठीवाल–पाकपट्टन, पंजाब
11.	भक्त त्रिलोचन जी	1267–1335	ब्राह्मण	4	वारसी ग्राम, महाराष्ट्र
12.	भक्त वेणी जी	14वीं सदी	ब्राह्मण	3	असनी ग्राम, बिहार
13.	भक्त धन्ना जी	जन्म 1413	जाट	4	चोरू तहसील/धुआन नगर, राजस्थान
14.	भक्त जयदेव जी	1171–1204	ब्राह्मण	2	केन्दुली, वीरभूमि, उड़ीसा
15.	भक्त भीखण जी	1480–1573	मुसलमान	2	काकोरी, उत्तर प्रदेश
16.	भक्त सैण जी	1390–1430	नाई	1	रीवा, मध्यप्रदेश
17.	भक्त पीपा जी	जन्म 1426	क्षत्रीय	1	गगरौन, झालावाड़, राजस्थान

18.	भक्त सदना जी	15वीं सदी	कसाई	1	सहबान, सिंध
19.	भक्त रामानन्द जी	1366–1467	ब्राह्मण	1	वाराणसी, उत्तर प्रदेश
20.	भक्त परमानन्द जी	15वीं सदी	ब्राह्मण	1	वारसी, महाराष्ट्र
21.	भक्त सूरदास जी	16वीं सदी	ब्राह्मण	1	सीही, उत्तर प्रदेश
22.	भाई सुन्दर जी	15वीं सदी	क्षत्रीय	6	पंजाब
23.	भाई सत्ता जी	15वीं सदी	डूम	3	पंजाब
24.	भाई राय बलवण्ड जी	15वीं सदी	डूम	5	पंजाब
25.	भाई मरदाना जी	1459–1534	मुसलमान मिरासी	3	पंजाब
26.	भट कल्सहार जी	15वीं सदी	ब्राह्मण	54	कश्मीर
27.	भट जालप जी	15वीं सदी	ब्राह्मण	5	कश्मीर
28.	भट कीरत जी	15वीं सदी	ब्राह्मण	8	कश्मीर
29.	भट भीखा जी	15वीं सदी	ब्राह्मण	2	कश्मीर
30.	भट सल्ह जी	15वीं सदी	ब्राह्मण	3	कश्मीर
31.	भट नल्ह जी	15वीं सदी	ब्राह्मण	16	कश्मीर
32.	भट भल्ह जी	15वीं सदी	ब्राह्मण	1	कश्मीर
33.	भट गयन्द जी	15वीं सदी	ब्राह्मण	13	कश्मीर
34.	भट मथुरा जी	15वीं सदी	ब्राह्मण	14	कश्मीर
35.	भट बल्ह जी	15वीं सदी	ब्राह्मण	5	कश्मीर
36.	भट हरबंस जी	15वीं सदी	ब्राह्मण	2	कश्मीर
	कुल वाणी का योग			**5873** शबद्	

श्री गुरुग्रंथ साहिब में प्रयुक्त परमात्मा के विभिन्न नाम और उनकी आवृत्ति-संख्या

	नाम	संख्या
1.	हरि	8344
2.	राम	2533
3.	प्रभु	1371
4.	गोपाल	431
5.	गोविन्द	475
6.	पारब्रह्म	324
7.	ठाकुर	283
8.	कर्ता	228
9.	दाता	151
10.	परमेश्वर	139
11.	मुरारी	97
12.	नारायण	85
13.	अन्तरर्यामी	31
14.	जगदीश	60
15	सतिनाम	59
16.	मोहन	54
17.	अल्लाह	46
18.	भगवान	30
19.	नरहरि	29
20.	मुकुन्द	28
21.	माधव	27
22.	परमानन्द	22
23.	कृष्ण	21
24.	सारंगपाणि	20
25.	विट्ठल	16
26.	वाहिगुरु	15
27.	बनवारी	15
28.	नरसिंह	15
29.	दामोदर	9
30.	मधुसूदन	7
31.	रघुनाथ	6
32.	बावन	3
33.	सारंगधर	3
34.	अच्युत	3
35.	रघुराइ	2
36.	गोपीनाथ	2
37.	गोवर्धनधारी	2

इन नामों के अतिरिक्त गोसाईं, कमलाकान्त, लक्ष्मीधर, चक्रधर, चतुर्भुज, मच्छ, कूर्म, वराह, गोरख, रुद्र, खुदा, खालिक, कादिर, करीम, सर्वप्रतिपालक, रहीम, अलख, अपार, बेशुमार, भगवंत, भव-भंजन, ऋषिकेश, वासुदेव, लीलाधर आदि नामों का भी परमात्मा के विभिन्न नामों के रूप में प्रयोग हुआ हैं। श्री गुरुग्रंथ साहिब जी में 1ओंकार, अकालपुरख, ईश्वर या प्रभु की ही उपासना की गई हैं। श्री गुरुग्रंथ साहिब जी की दर्शन के अनुसार सभी पंथ-सम्प्रदायों द्वारा प्रयोग में लाए जाने वाले नाम उस एक ईश्वर के पर्यायवाची नाम ही हैं। इसीलिए अन्यान्य सभी प्रभु के नाम ईश्वर सिमरन के लिए स्वीकार्य हैं। मात्र नाम को लेकर अकालपुरख, हरि, ईश्वर, अल्लाह के भेद का कोई अर्थ नहीं है, ऐसा श्री गुरुग्रंथ साहिब जी का मत हमारे सामने आता है।

राज प्रासादों के स्तुतिगानों से निकलकर गुरु परम्परा की दुनिया में आने वाले कश्मीर के भट साहिबानों का विशेष महत्व है। इन विशिष्ट भटों की वाणी श्री गुरुग्रंथ साहिब जी में दर्ज हैं। आज सिख बड़ी श्रद्धा से प्रभु के एक नाम 'वाहिगुरु' का भक्तिपूर्ण जाप करते हैं। कश्मीर के भटों की वाणी से आए इस अनाहद् शब्द 'वाहिगुरु' को नित्य प्रति स्तुतियोग्य शब्द माना गया है। श्री गुरुग्रंथ साहिब में भटों की वाणी में 15 बार वाहिगुरु शब्द का प्रयोग हुआ हैं।

श्री गुरुग्रंथ साहिब जी के कुल अंग (पृष्ठ)–श्री गुरुग्रंथ साहिब जी में कुल 1430 पृष्ठ हैं। गुरु परम्परा के अनुसार पृष्ठों को कहा जाता हैं। प्रत्येक अंग पर दर्ज वाणी, चाहे वह गुरु साहिबानों की हो अथवा भक्त साहिबानों की, को गुरबाणी ही माना जाता है। प्रत्येक अंग की वाणी गुरु का हुक्म हैं, ऐसी गुरु परम्परा है।

–पंजाबी भाषा में लिखने की लिपि गुरमुखी है। कुछ सामाजिक समूह गुरमुखी लिपि का प्रयोग सिन्धी भाषा के लिए दूसरे विकल्प के रूप में भी करते हैं। सम्भवत: ''गुरमुखी लिपि'' परिभाषिक शब्द की उत्पत्ति – ''सिख गुरूओं के मुख से उच्चारित बाणी को लिपिबद्ध करने वाला तन्त्र'' से हुई जान पड़ती है। यह वह लिपि है जिसमें साहित्यिक, सामाजिक व राजनैतिक धरातल पर पूरे पंजाब को एक तरफा प्रभावित किया। पंजाब की रगों में अगर पंजाबी दौड़ती है, तो गुरमुखी लिपि के कारण। गुरमुखी लिपि के महान ग्रन्थ –श्री गुरूग्रन्थ साहिब जी ने पंजाब ही नही बल्कि संपूर्ण भारत को नया आध्यात्मिक आयाम दिया। विदेशी आक्रांता, लुटेरे, जेहादी, विभाजक तत्व पंजाब में आये और चले गये। परन्तु गुरमुखी लिपि ने पंजाब और भारत को सदैव स्थायित्व दिया। गुरमुखी लिपि ने सामाजिक व राजनैतिक सतह पर अरबी लिपि का सफल मुकाबला किया। विशेषकर यह देखना चाहिए कि उस काल खण्ड में अरबी लिपि प्रशासन की लिपि थी।

गुरमुखी लिपि के अक्षर गुरू नानक देव जी की देन है। लेकिन इसके नवीन प्रयोग और लिपि को स्थापित करने का श्रेय द्वितीय गुरू अंगद देव जी को जाता है। गुरूमुखी लिपि मूलत: ब्रह्मी लिपि जैसी है। गुरू अंगद देव जी ने गुरमुखी लिपि का परिवर्तन व संवर्द्धन किया। अक्षर को पुन: क्रमबद्ध किया। अक्षरों के आकारों में भी परिवर्तन किया गया। गुरू अंगद देव जी ने गुरमुखी वर्णमाला को नया आकार व क्रम दिया। बोलचाल की भाषा के अनुरूप ही गुरमुखी के अक्षरों का चयन किया गया। गुरमुखी लिपि के अक्षरों की उंचाई समान है, जो कि दो समानान्तर क्षैतिज रेखाओं के मध्य लिखी जा सकती है।

श्री गुरुग्रंथ साहिब जी की लिपि भले ही गुरमुखी है, परन्तु उसमें पंजाबी भाषा के अतिरिक्त ब्रज भाषा, भोजपुरी, सिंधी, मुल्तानी, संस्कृत, मराठी, उर्दू, फारसी, मारवाड़ी, अवधी, ग्वारी आदि अनेक भाषाओं का प्रभावशाली मेल मिलता है। सिख गुरु साहिबान जिन–जिन प्रान्तों में अपने प्रवासों के दौरान गए, वहां की भाषा कहीं न कहीं उनके शबदों में नजर आती हैं। इसके साथ–साथ भक्त साहिबानों की कर्मस्थलियों पर बोली जाने वाली प्रान्तीय भाषाओं के दर्शन भी उनके शबदों में होते हैं। यह विषय ध्यान देने योग्य हैं कि उस कालखण्ड के संत–समाज ने एक अलग प्रकार की संत भाषा का भी विकास कर लिया था। यह संत भाषा जनसामान्य तक पहुंचने का सरल व प्रभावशाली माध्यम था।

भाई गुरदास जी की वारों व प्रमाणिक इतिहास में प्रवासों (उदासी) के अनुसार श्री गुरू नानक देव जी के पास पोथी (जिसने बाद में श्री गुरू ग्रन्थ साहिब जी का स्वरूप पाया) हुआ करती थी। वे लिखते भी हैं –

पृष्ठ 1

–श्री गुरुग्रंथ साहिब जी की वाणी की रचना भारतीय शास्त्रीय रागों के आधार पर की गई हैं। वाणी को जिस राग में निबद्ध किया गया, उस राग का वर्णन भी शबद् के साथ अंकित किया गया हैं। श्री गुरुग्रंथ साहिब जी की वाणी कुल 31 रागों पर आधारित हैं। एक राग परिवार के कई सदस्यों का प्रयोग भी हुआ हैं। ताल के लिए भी शब्द प्रयोग किया गया हैं। साथ ही, शास्त्रीय रागों को संबंधित स्थानीय इलाकों में गाये जाने वाली रीति में ढाला गया है, ताकि संगत व श्रोताओं के मन में सरलता से शबद् व राग का रस घुल सके।

श्री गुरुग्रंथ साहिब जी का दार्शनिक स्वरूप

एक ओंकार (੧ਓ

श्री गुरुग्रंथ साहिब जी का प्रारम्भ ੧ਓ

1

1.

1

1

1

पृष्ठ 982

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. **सिख मत के संस्थापक कौन है?**
(क) गुरु नानकदेव जी ( ) (ख) गुरु गोबिन्द सिंह जी ( )
(ग) गुरु अर्जुनदेव जी ( ) (घ) गुरु तेगबहादुर जी ( )

2. **गुरु नानकदेव जी ने कौन सा नगर बसाया?**
(क) करतारपुर ( ) (ख) खडूर साहिब ( )
(ग) सुलतानपुर लोधी ( ) (घ) गोइन्दवाल साहिब ( )

3. **गुरु नानकदेव जी के उत्तराधिकारी कौन थे?**
(क) भाई जेठा जी ( ) (ख) बाबा बुढ्डा जी ( )
(ग) भाई लहणा जी ( ) (घ) श्री सिरीचन्द जी ( )

4. **'जपुजी' साहिब वाणी किस की रचना है?**
(क) भक्त कबीर जी ( ) (ख) गुरु नानकदेव जी ( )
(ग) गुरु गोबिन्द सिंह जी ( ) (घ) गुरु अर्जुनदेव जी ( )

5. **'जपुजी' साहिब में कितनी पौड़ियाँ है?**
(क) 24 ( ) (ख) 40 ( )
(ग) 25 ( ) (घ) 38 ( )

6. **इनमें से कौन-सी वाणी नितनेम की वाणियों में शामिल नहीं है?**
(क) सुखमनी साहिब ( ) (ख) कीर्तन सोहिला ( )
(ग) सोदर रहिरास ( ) (घ) जापु साहिब ( )

7. **'सुखमनी' साहिब के रचियता कौन है?**
(क) गुरु नानकदेव जी ( ) (ख) गुरु अर्जुन देव जी ( )
(ग) गुरु गोबिन्द सिंह जी ( ) (घ) गुरु रामदास जी ( )

8. **सुखमनी साहिब में कितनी अष्टपदियाँ है?**
(क) 30 ( ) (ख) 24 ( )
(ग) 40 ( ) (घ) 36 ( )

9. **'कीर्तन सोहिला' बाणी का पाठ किस समय किया जाता है?**
(क) प्रात:काल ( ) (ख) दोपहर ( )
(ग) रात्रि (सोने से पहले) ( ) (घ) सायंकाल ( )

10. **वह किनकी बाणी है, जो गुरुग्रंथ साहिब में शामिल नहीं है, परन्तु उसे श्री गुरुग्रंथ साहिब की 'कुंजी' का पद प्राप्त है?**
(क) भक्त नामदेव जी ( ) (ख) भक्त कबीर जी ( )
(ग) भाई गुरदास जी ( ) (घ) भाई नन्दलाल जी ( )

11. **किस मुगल सम्राट को गुरु नानकदेव जी ने 'जाबर' कहा था?**
(क) बाबर ( ) (ख) अकबर ( )
(ग) जहाँगीर ( ) (घ) औरंगजेब ( )

12. **वह कौन-सा मुगल सम्राट था, जिसको गुरु अमरदास जी ने यह आदेश दिया था कि पहले लंगर छको (ग्रहण करो), फिर मेरे दरबार में आओ?**

इनमें से किस शहर का नाम ''गुरु का चक्क'' था?

माता गुजरी कौन से गुरु साहिबान की माता जी थीं?

वह कौन से गुरु साहिबान थे जिनके दादा भी शहीद हुए, पौत्र भी तथा जिनके पिता भी योद्धा थे तथा पुत्र भी?

श्री गुरुग्रंथ साहिब के लिए सबसे प्रथम नियुक्त होने वाले ग्रंथी कौन थे?

‘‘दोहिता बाणी का बोहिथा’’ सूक्ति कौन से गुरु साहिबान से संबंधित है अर्थात् यह भविष्य वाणी किस के बारे में की गई थी ?

श्री हरि मन्दिर साहिब अमृतसर को स्वर्ण मन्दिर का रूप किसने बनवाया था?

‘‘आगिआ भयी अकाल की, तभै चलाइओ पंथ’’ किसकी रचना है?

श्री गुरुग्रंथ साहिब जी का सम्पादन किसने किया?

एक गुरु का सिख मैदाने जंग में बिना किसी भेद भाव के सभी घायलों को पानी पिलाता था। उस गुरसिख का नाम है?

गुरु तेगबहादुर साहिब के एक सिख को उबलते पानी में डालकर शहीद किया गया, उस गुरसिख का क्या नाम है?

श्री गुरु तेगबहादुर साहिब के एक सिख को आरे से चीरकर शहीद कर दिया गया। उस गुरसिख का क्या नाम है?

एक गुरु सिख ने अपने धर्म की रक्षा करते हुए अपनी खोपड़ी उतरवा ली परन्तु अपने केशों, जोकि सिखी का अभिन्न अंग है, पर आंच नहीं आने दी। उस गुरसिख का नाम क्या है?

एक अन्य गुरुसिख को चरखड़ी पर चढ़ाकर शहीद किया गया परन्तु उसने अपने धर्म पर आंच नहीं आने दी, वह कौन था?

गुरु के एक सिख के शरीर के बंद बंद काटकर टुकड़े-टुकड़े करके शहीद किया गया परन्तु उसने अपने धर्म पर आंच नहीं आने दी उस गुरसिख का क्या नाम था ?

‘‘गुरु लाधो रे’’ सूक्ति किस गुरु साहिबान से संबंधित हैं?

मीरी-पीरी की तलवारें किस स्थिति की प्रतीक हैं?

श्री गुरुग्रंथ साहिब को ‘गुरु’ पद किसने दिया?

इनमें से कौन सा ऐतिहासिक गुरुद्वारा साहिब दिल्ली में नहीं है?

सिख इतिहास में गुरु गद्दी के हस्तान्तरण के लिए मापदण्ड अथवा कसौटी क्या थी?

. प्रचलित पंक्ति ''सब सिखन को हुक्म है''.... में श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी का सिख पंथ के लिए क्या आदेश था?

''तेरी उपमा तोहि बनि आवै'' कौन से गुरु साहिबान की स्तुति है?

भाई गुरदास जी द्वारा रचित एक अन्य पंक्ति ''गुरुमुख कलि विचि प्रकट होआ'' में किस गुरमुख का वर्णन है ?

प्रचलित पंक्ति ''फिर संकट जोनि गरभ न आयो'' किसके संबंध में है ?

''घरू नउ निधि आवै धाय'' किस गुरु साहिबान के संबंध में है?

''जिसि डिठै सभु दुख जाए'' पंक्ति किस गुरु साहिबान के लिए कहा गया है?

''बैठा सोढ़ी पातशाह'' कौन से गुरु साहिबान के लिए किया गया है?

'हिन्द दी चादर' कौन से गुरु साहिबान को सम्बोधन है?

सिख इतिहास का सर्वप्रथम शहीद कौन सा है?

''निओटिओ की ओट, निआसरियों का आसरा, निथाविया दी था'', किस गुरु साहिबान की उपमा है?

मीरी-पीरी के संस्थापक कौन थे?

'न कउ हिन्दु, न कउ मुसलमान' कौन से गुरु साहिबान की अनुभूति थी?

''दल भजन गुरु सूरमा बढ़ जोधा बहु परउपकारी'' किसके लिए कहा गया है?

''शरीर पंथ में, आत्मा ग्रंथ में'' किस का अन्तिम संदेश था?

गुरु अर्जुनदेव जी ने बारह माह का उच्चरण (रचना) किस राग में किया?

‘आसा दी वार’ जोकि नित्य प्रति गुरुद्वारों में गायी जाती है उसमें कुल कितनी पाउड़ी है?

‘वाहु वाहु गोबिन्द सिंह आपे गुरु चेला’ किसकी रचना है?

मुगल सम्राज जहाँगीर ने किसको लाहौर में शहीद किया था?

‘‘छहरटा साहिब (अमृतसर) ऐतिहासिक गुरुद्वारा किस की स्मृति है?

‘गुरु द्वारा रीठा साहिब’ किस की स्मृति में है?

‘श्री पांवटा साहिब’ स्थान से कौन से गुरु साहिबान की स्मृति जुड़ी है?

‘गुरु की काशी’ किस गुरुद्वारा साहिब का नाम है?

‘श्री केशगढ़ साहिब’ कहाँ स्थित है?

‘गुरुद्वारा श्री नानकमता साहिब’ कहाँ स्थित है?

‘तीरथु तपु दया दतु दानु’ किस बाणी की पंक्ति है?

‘थिति वारू न जोगी जाणै, रूति माहु न कोई’ किस वाणी की पंक्ति है?

‘अंतरजामी पुरख बिधाते सरधा मन की पूरे’ किस वाणी की पंक्ति है?

‘आनन्द साहिब’ किस गुरु साहिबान की रचना है?

‘आनन्द साहिब’ वाणी किस राग में लिखी गयी है?

‘सिर कंपै पगु डग मगै, नयन जोति ते हीन’ किस वाणी की पंक्ति है?

‘सिरि सिरि रिजकु संबाहि ठाकुर काहे मन भउ करिआ’ किस वाणी की पंक्ति है?

‘आनन्दकारज’ (विवाहोत्सव) के समय दम्पत्ति के फेरों के समय जो वाणी ‘लांवा’ गायन की परम्परा है, वह किस गुरु साहिबान की है?

‘आनन्दकारज’ की वाणी ‘लांवा’ किस राग में निबद्ध है?

सिख इतिहास में, गुरसिख भाई लालो जी का संबंध किस गुरु साहिबान के जीवनकाल से है?

सिख इतिहास में, गुरसिख भाई कन्हैया जी का संबंध किस गुरु साहिबान के जीवनकाल से है?

बाबा बंदा सिंह बहादुर का संबंध किस गुरु साहिबान के जीवनकाल से है?

माता सुलखणी जी किस गुरु साहिबान की माता का नाम था?

फारसी के विद्वान कवि व गुरसिख भाई नन्दलाल जी का संबंध किस गुरु साहिबान के जीवनकाल से है?

सूफी मुस्लिम फकीर पीर बुद्धू शाह का संबंध किस गुरु साहिबान के जीवनकाल से हैं?

गुरसिख भाई मक्खन शाह लुबाणा जी का संबंध किस गुरु साहिबान के जीवनकाल से है?

अहंकारी वली कंधारी का संबंध किस गुरु साहिबान के जीवनकाल से है?

राय बुलार नामक व्यक्ति का संबंध किस गुरु साहिबान के जीवकाल से है?

गुरसिख सत्ता बलवंड का संबंध किस गुरु साहिबान के जीवनकाल से है?

निम्नलिखित गुरु साहिबानों में से एक गुरु साहिबान की वाणी श्री गुरुग्रंथ साहिब जी में नहीं है। परन्तु उनकी लिखित वाणी को सिख परम्परानुसार प्रमाणिक बाणी का सम्मान प्राप्त हैं। वे गुरु साहिबान कौन है?

निम्नलिखित पंक्तियां श्री गुरुग्रंथ साहिब जी में अंकित नहीं है, परन्तु उसे प्रमाणिक वाणी का सम्मान प्राप्त है। वह पंक्ति कौनसी है?

‘गोबिन्द मिलण की इह तेरी बरीआ’ किस बाणी की पंक्ति है?

‘सो कयों मंदा आखिए जिति जंमहि राजान’ किस बाणी की पंक्ति है?

‘सैल पत्थर महि जन्त उपाय, ता का रिजकु आगै करि धरिआ’ किस बाणी की पंक्ति है?

‘आनन्दु भया मेरी माये’ किस बाणी की पंक्ति है?

‘इहु सरीरा मेरिआ, इस जग महि आइकै, क्या तुधु करम कमाइआ’ किस बाणी की पंक्ति है?

‘सो दरू केहा सो घरू केहा, जितु बहि सरब समाले’ किस वाणी की पंक्ति है?

‘चित्त न भयो हमरो आवन कह’ किस गुरु साहिबान की वाणी है?

‘नाम जपो, किरत करो, वण्ड छक्को’ कौन से गुरु साहिबान का उपदेश है?

श्री अकाल तख्त साहिब की स्थापना किस गुरु साहिबान ने की थी?

लंगर प्रथा का मुख्य उद्देश्य क्या था?

‘जो हमको परमेसर उचरि है, ते सभ नरक कुंड मै परि है’ किस का आदेश है?

श्री गुरुग्रंथ साहिब में मूल मंत्र कितनी बार आया है?

वे कौन से गुरु साहिबान है, जिनके पड़दादा जी, पिताजी, माताजी, चार सुपुत्रों ने बलिदान दिया और सर्वंशदानी कहलाए?

सिख मत का धार्मिक ग्रंथ कौन सा है?

उत्तरमाला

क्रमबद्ध रूप से गुरु साहिबानों के नाम बताएं?

गुरु गोबिन्द सिंह जी द्वारा सृजित 'पंज प्यारे' किन-किन क्षेत्रों से संबंद्ध थे, उनकी सामाजिक पृष्ठभूमि क्या थी, उनके नाम क्या थे, सारणी बनाकर बताएं?

खत्री

झीवर

छीपा

नाई

गुरु गोबिन्द सिंह जी के चार साहिबजादों (सुपुत्रों) के नाम क्या क्या है?

अमृत संचार की पांच बाणियां कौन-कौन सी हैं?

सांयकाल में पढ़ी जाने वाली बाणी कौनसी हैं?

रात्रि में सोने से पहले कौनसी बाणी पढ़ी जाती हैं?

पांच विकार कौन से हैं?

पांच ककार कौन से हैं?

पांच तख्त कौन से हैं?

चार बड़ी कुरहितें (वर्जित कार्य) कौन सी हैं?

भक्त रविदास जी का परिचय क्या है?

भक्त नामदेव जी का संक्षिप्त परिचय बताएं?

भक्त कबीर जी का जीवन परिचय दें?

शेख फरीद कौन थे?

भक्त जयदेव जी कौन थे?

भक्त त्रिलोचन जी का संक्षिप्त परिचय दीजिए?

दो गुरसिख सत्ता और बलवंड के विषय में बताएं?

भक्त पीपा जी का परिचय दीजिए?

भक्त साहिबान धन्ना भगत का क्या परिचय है?

गुरु गोबिन्द सिंह जी ने श्री गुरुग्रंथ साहिब जी को गुरता गद्दी प्रदान करते समय सिखों से क्या कहा ?

आगिआ भयी अकाल की, तभै चलायो पंथ।
सब सिखन को हुक्म है, गुरु मानियो ग्रंथ॥

भाई गुरदास जी का परिचय बताएं?

भाई मतिदास जी के बारे में बताएं?

भाई मनीसिंह जी का क्या परिचय है?

बाबा दीप सिंह जी का क्या परिचय है?

श्री गुरुग्रंथ साहिब जी की मूल हस्थलिखित बीड़ों का इतिहास क्या है?

करतारपुर वाली बीड़ साहिब

डॉ. हरभजन सिंह

डॉ. गुरनाम कौर बेदी

दमदमे
वाली बीड़

डॉ. परशुराम चतुर्वेदी

- डॉ. तरन सिंह

डॉ. मनमोहन सहगल

डॉ. हरमेन्द्र सिंह बेदी

डॉ. धर्मपाल मैनी